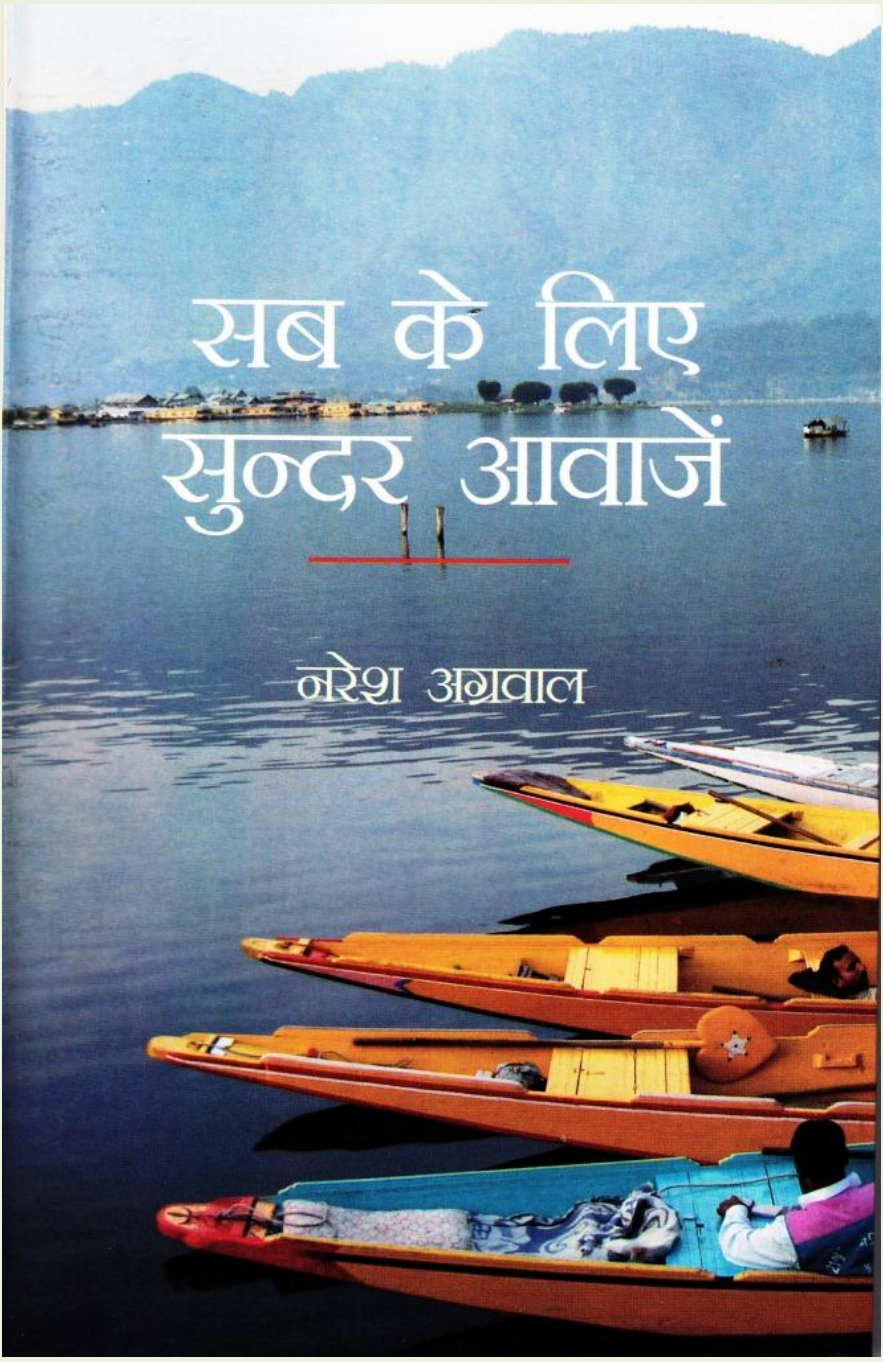
सब के लिए
सुन्दर आवाजें
नरेश अग्रवाल

सब के लिए सुन्दर आवाजें

डॉ. नरेश अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।
पुस्तक के रूप में इसका प्रकाशन– प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा सन् 2006 में किया जा चुका है।

ISBN: 81-7714-262-3

ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली – 110002
फोनः 23253234,
65283371

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति–सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों दुर्लभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।
लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं। यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क –
रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001
दूरभाष – 9334825981, 7488504892
ई. मेल – **smcjsr77@gmail.com**
बेवसाईट : **www.nareshagarwala.com**

आत्मकथन

जब तक शब्द अक्षर थे वे चुपचाप थे, परन्तु जब वे चित्र बने, चलने लगे। एक सधी हुई कलम से सारा काव्य चित्रमय हो जाता है। घटनाएँ काल्पनिक न होकर एक जीती–जागती प्रस्तुति बन जाती हैं। वे सारे प्रतीक और उपमाएँ अपने पंख फड़फड़ाने लगती हैं, और जब समाप्त होता है कथन तो लगता है कुछ रहस्यमय उतर आया है हृदय में, वह भी बिना अनुमति के। इसी तरह के अनुभवों से सरोकार हो पाठक का, यही सोचकर इन कविताओं की रचना की गयी है।

अन्त में बस इतना कहना चाहूँगा–
लोग उलझे रहेंगे।
शताब्दी के नये–नये कारनामों में
हर दिन नयी चीजें उपलब्ध होंगी
उनके हाथों में
फिर भी मेरी कविताओं,
तुम्हें कोई संघर्ष नहीं करना पड़ेगा,
रखा जाएगा हाथों में जब भी तुम्हें
अँगुलियाँ पन्ने पलटने लगेंगी।

–डॉ. नरेश अग्रवाल

पूर्व लिखित पुस्तकों पर सम्मतियाँ

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।''
– इंडिया टुडे

''सब कुछ को सलीके से छिपाकर वे अपने पाठक को सरल से सरल भाषा में दृश्य–दर–दृश्य, कुछ अनसुने, अनदेखे और अनजाने को सुनने, देखने और जानने के लिये उकसाते हैं। इसलिए उस मर्म और तत्त्व को ढूँढ़ते हुए, वहाँ तक पहुँचने की प्रक्रिया में वे पाठक को खोजकर पाने के सुख से सुखी कर देना चाहते हैं। उसे अपने ढंग से अपने लिए पाकर पाठक के मन में उसके विस्तार और उसके प्रदर्शन की सबसे ज्यादा सम्भावना बनती है।''
लीलाधर जगूड़ी
(पद्मश्री एवं साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित)

''ये कविताएँ ह्रदय का उद्गार हैं, ह्रदय की बात है। प्रभविष्णु कविचित्त पर जीवन के प्रसंगों ने जो तरंगें उत्पन्न की, उनकी अक्षत अभिव्यक्ति सरल–सुगम भाषा में कवि का अभीष्ट है। ये जीवन–प्रसंग जाने–पहचाने, रोज–ब–रोज के होते हुए भी एक विस्तृत सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत होकर नया अर्थ ग्रहण करते हैं।''
– अरुण कमल, कवि एवं सम्पादक

''नये घर में प्रवेश, नये घर में प्रवेश नहीं, कवि का अपनी अन्तश्चेतना की चौखटों को पारकर अपने आप को पाने, खोजने का प्रयत्न हे। गहन आत्मविश्लेषणात्मक है कवि का दृष्टि। दुनिया के सारे कुएँ से लेकर–कई कविताएँ।''
–चित्रा मुद्गल, उपन्यासकार

''श्री नरेश अग्रवाल की इन कविताओं में समय और परिवेश के प्रति कवि की विनम्रता आकर्षित करती है। इनमें किसी प्रकार का भावुक आवेश या आक्रामक उबाल नहीं है, न अनुभव और भाषा की स्फीति। अभिव्यक्ति का यह अनुशासन इन कविताओं को प्रौढ़ और चिन्तनपरक बनाता है।''
–श्री विश्वनाथ तिवारी
कवि एवं सम्पादक, दस्तावेज

''आपकी सृजनात्मकता ने नये धरातलों को स्पर्श किया है। अपने आसपास के जीवन से यह संलग्नता इनकी एक विशिष्ट पहचान बनाती है। संवेदनात्मक गहराई में डूबी हुई इन कविताओं को पढ़कर बहुत अच्छा लगा। आपकी मार्मिकता मन को छूती है।''
– विजय कुमार, कवि एवं आलोचक

''आपकी प्रकृति आधारित कविताएँ भी मात्र दृश्यचित्र नहीं हैं, उनमें मन बोलता है। कश्मीर को आपने सैरगाह की जगह संवेदना बनाया है। अगर इन पुस्तकों का वितरण ठीक प्रकार से किया जाए तो ये समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होंगी।''
– ममता कालिया, साहित्यकार

''आपकी कविताओं में बड़ी सहजता है। अनुभवों का निर्व्याज आवेग है। बड़ी आत्मीय स्वतः स्फूर्तता है।''
– विजेन्द्र, कवि एवं सम्पादक

''श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है।''

–श्रवण कुमार गोस्वामी
पूर्व सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति
गृह मन्त्रालय, भारत सरकार

विषय-सूची

विडम्बना – 12
वे चिनार के पेड़ – 13
हक – 14
घोड़े – 15
खुशिया – 16
मित्र – 17
पूजा के बाद – 18
अनुभूतियां – 19
मनाली में – 20
मेरे अनुभव – 21
पत्र – 22
दुखी जोकर – 23
आग – 24
यात्रा – 25
सम्पादक – 26
अनुभव – 27
अनुभव – 28
यह देश मेरा है – 29
प्रशिक्षण – 30
ठूंठ – 31
आशा में – 32
विदाई – 33
एक श्रद्धांजलि – 34

जहां नहीं गया हूं मैं – 35
अपने हित की बात – 36
यहां की दुनिया – 37
सभी के लिए सुन्दर आवाज – 38
अपनी उपलब्धियां – 39
आज की रात – 40
यहां के दृश्य – 41
हाथ मिलाना – 42
चरखे की तरह – 43
विदाई का टीका – 44
सुबह की हवा – 45
घटनाएं – 46
सेल्समेन – 48
जीवन उड़ता है – 49
सभी अलग–थलग – 50
बदलाव – 51
किताब – 52
वापसी – 53
छत – 54
ठहाकों के साथ – 55
टेम्पू चालक – 56
कुछ कहना मुश्किल है – 57
आती हुई रेलगाड़ी – 58
सभी जाने–पहचाने – 59
मैं सोचता हूं – 60
सुबह की सैर – 61

तुम्हारे लिए – 62
सुबह की नींद – 63
नई चीजें – 64
उलझा हुआ काम – 65
बिछुड़ा हुआ दोस्त – 67
लापरवाह – 68
प्रेम पत्र – 69
विकसित होता बच्चा – 70
झील – 71
झील – 72
नदियों का मिलन – 73
सब कुछ मौन है – 74

❑❑❑

विडम्बना

यह विडम्बना थी कि
इन सुन्दर दृश्यों को छोड़कर
वापस मुझे आना होता था
मेरे ठहराव में उतनी गहराई नहीं थी
कि स्थापित कर लेता मैं वहीं, अपने आपको
केवल उनके रंगों से रंगता अपने आपको
और धीरे–धीरे वापस लौटने पर
चढ़ जाते थे इन पर, दूसरे ही रंग।
फिर भी मैंने कभी सोचा नहीं
एक जगह चुपचाप रहना ही अच्छा होगा
बल्कि फिर से तलाशी दूसरी धरती
और पाया ये भी वैसे ही हैं
पृथ्वी के रंगीन टुकड़े।
जीवन सभी जगह पर रह सकता था
क्या तो कठोरता में या क्या तो तरलता में
और जहाँ दोनों थे
वहीं अद्‌भुत दृश्य बन सके
और हमें दोनों से तादात्म्य बैठाना था।

❑❑❑

वे चिनार के पेड़

वे चिनार के पेड़, एक साथ चार की संख्या में
जैसे एक परिवार और उन पर ढलते हुए सूर्य की रोशनी
अभी दूर थे हम उनसे
लेकिन कितना अधिक था
उनके पास जाने का मोह
वे काले-काले तने विशाल कद में
लदे हुए हरे-हरे पत्तों से
जैसे कई शक्तिशाली पुरुष खड़े हों एक साथ
कहीं भी देखो
आँखें फिर उनकी तरफ खिंच जाती
उनकी जड़ें बड़े गोलाकार चबूतरे सी
एक-दूसरे से मिली हुई
झील का पानी उनके समतल बहता हुआ
और सामने बादल सघन
कुहासे से सारा आकाश ढके हुए
हम जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहते थे इन पेड़ों तक
बैठना चाहते थे कुछ देर उनके पास
और अचानक बारिश इतनी तेज
पहुँच गयी नाव वापस दूसरे किनारे पर
सारा मोह भंग हो गया एकाएक
हम भी भींग रहे थे और साथ-साथ वे पेड़ भी
जो लग रहे थे पहले से अधिक खूबसूरत।

❑❑❑

हक़

प्रकृति की सुन्दरता पर किसी का हक नहीं था
वो आजाद थी, इसलिए सुन्दर थी
एक खूबसूरत चट्टान को तोड़कर
दो नहीं बनाया जा सकता
ना ही एक बकरी के जिस्म को दो।
इस धूप को कोई नहीं रोक सकता था
धीरे–धीरे यह छा जाती थी चारों तरफ
इसलिए इसके भी दो हिस्से नहीं हो सकते
और जो हिस्से सुन्दर नहीं थे
वे लड़ाईयों के लिए पहले ही छोड़ दिये गए थे।

❑❑❑

घोड़े

जहाँ पर आँखें नहीं पहुँच पायेंगी
घोड़े वहाँ तक हमें ले जाएंगे
इन पर हम सवार
लेकिन लगाम इसके मालिक के पास
उसी की ठोकर की दिशा में ये चलते हैं
जब ऊँचाई आए तो थोड़ा आगे की तरफ झुक जाओ
जब ढलान पीछे की तरफ
इसी तरह से सामंजस्य बनाये रखना होता है इनके साथ
और देखते-देखते कितनी सारी दूरियाँ तय कर ली हैं हमने
सामने नदी है और घोड़े को लगी है प्यास
थोड़ी देर हम यहीं रुक जाते हैं
धीरे-धीरे टहलते हैं
तब तक यह घोड़ा करेगा आराम
और उसके चुस्त होते ही यात्रा शुरू
घोड़े के मालिक की जिद है
वह हमें छोड़ेगा नहीं, दिखलायेगा यहां की सारी चीजें
हम थके हुए होने पर भी कर देते हैं आत्मसमर्पण,
उसके आगे
और वापस लौटने पर
घोड़े के शरीर की गंध तक रह जाती है हमारे कपड़ों पर।

❑❑❑

खुशियाँ

मुझे थोड़ी सी खुशियाँ मिलती हैं
और मैं वापस आ जाता हूँ काम पर
जबकि पानी की खुशियों से घास उभरने लगती है
और नदियाँ भरी हों, तो नाव चल पड़ती है दूर-दूर तक।

वहीं सुखद आवाजें तालियों की
प्रेरित करती है नर्तक को मोहक मुद्राओं में थिरकने को
और चाँद सबसे खूबसूरत दिखाई देता है
करवा चौथ के दिन चुनरी से सजी सुहागनों को

हर शादी पर घोड़े भी दूल्हे बन जाते हैं
और बड़ा भाई बेहद खुश होता है
छोटे को अपनी कमीज पहने नाचते देखकर

एक थके हुए आदमी को खुशी देती है उसकी पत्नी
घर के दरवाजे के बाहर इंतजार करती हुई
और वैसी हर चीज हमें खुशी देती है
जिसे स्वीकारते हैं हम प्यार से।

❑❑❑

मित्र

मित्र, तुम्हारी इस चाय को, एक संकल्प की तरह पीता हूँ
कि हमारी घनिष्ठता बढ़ती जाए।
कुछ चीजें तुम अपनी दिखाते हो तो
मैं तुम्हारे थोड़ा और करीब आ जाता हूँ
जैसे तुमने इन चीजों पर मुझे अपना हक दिया।
धीरे-धीरे ये तस्वीरें, ये चिट्ठियाँ
हमारी मिली-जुली अँगुलियों से
अपना रूप बदलती हैं, क्रम से
अंत में वे रख दी जाती हैं
अपने निर्धारित स्थल पर।
हम मिलते रहते हैं इसी तरह से कई बार
लेकिन हमने, उपहार नहीं दिये कभी आपस में
न ही इसे कभी जरूरी समझा
बस रिक्त होकर आये और भरे हुए होकर लौटे
यही थी हमारी नियति।

❑❑❑

पूजा के बाद

पूजा के बाद हमसे कहा गया
हम विसर्जित कर दें
जलते हुए दीयों को नदी के जल में
ऐसा ही किया हम सबने।
सैकड़ों दीये बहते हुए जा रहे थे एक साथ
अलग-अलग कतार में।
वे आगे बढ़ रहे थे
जैसे रात्रि के मुँह को थोड़ा-थोड़ा खोल रहे हों, प्रकाश से
इस तरह से मीलों की यात्रा तय की होगी इन्होंने
प्रत्येक किनारे को थोड़ी-थोड़ी रोशनी दी होगी
बुझने से पहले।
इनके प्रस्थान के साथ-साथ
हम सबने आँखें मूँद ली थी
और इन सारे दीयों की रोशनी को
एक प्रकाश पुंज की तरह महसूस किया था
हमने अपने भीतर।

❑❑❑

अनुभूतियाँ

सचमुच हमारी अनुभूतियाँ
नाव के चप्पू की तरह बदल जाती हैं हर पल
लगता है पानी सारे द्वार खोल रहा है खुशियों के
चीजें त्वरा के साथ आ रही हैं जा रही हैं
गाने की मधुर स्वर लहरियाँ गूँजती हुई रेडियो से
मानों ये झील के भीतर से ही आ रही हों
हम पानी के साथ बिलकुल साथ–साथ
और नाव को धीरे–धीरे बढ़ाता हुआ नाविक
मिला रहा है गाने के स्वर के साथ अपना स्वर
और हम खो चुके हैं पूरी तरह से,
यहाँ की सुन्दरता के साथ।

❑❑❑

मनाली में

ये सेव के पेड़ कितने अजनबी है मेरे लिए
हमेशा सेव से रिश्ता मेरा
आज ये पेड़ बिल्कुल मेरे पास
हाथ बढ़ाऊँ और तोड़ लूँ
लेकिन इन्हें तोड़ूँगा नहीं
फिर इन सूने पेड़ों को,
खूबसूरत कौन कहेगा।

❑❑❑

मेरे अनुभव

मेरे अनुभव बहुत छोटे हैं
और अंधकार उससे बहुत बड़ा
मालूम है मुझे इन तक मेरे पाँव कभी भी पहुँच नहीं पायेंगे
फिर भी–ऐ काली घटाओं, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ
प्यार करता हूँ तुम्हें
क्योंकि तुम एक वेबस स्त्री की चीख हो
जो तुम्हारे चमकते हुए आक्रोश में शामिल है
और जानता हूँ कि राख कभी काली नहीं होगी
ना ही कभी दफन होंगे काले चित्र,
किसी भी जलती आग से।
फिर भी मैं रात में दीये को देखता हूँ
किसी सोये अँधेरे को जगाने की कोशिश करते हुए
और अँधेरा है निष्ठुर
मेरी थकान में भी मेरे साथ सो जाता है
जागने के साथ ही
टटोलता हूँ अपने सारे सामान और वस्त्र
फिर से हो जाता हूँ दिन के साथ
फिर भी ये अँधेरा परछाई की तरह
कभी मेरे कदमों के आगे
तो कभी पीछे लिपटे रहता है
और मुझे इसके बारे में जानने की फुर्सत भी नहीं।

❑❑❑

पत्र

वह अंतिम पत्र था हमारे बीच
फिर कोई पत्र नहीं लिखा गया
पिछले सारे पत्रों के ऊपर था यह
अपने नीचे सभी को छुपाये हुए
जब भी इच्छा होती थी मन में
पुराने पत्रों को पढ़ने की
सबसे पहले इसे ही पढ़ना होता था
फिर पिछला–फिर निचला
इस तरह से हम वापस
अपने प्रेम की शुरूआत में पहुँच जाते थे।
वो पहला पत्र सचमुच खुबसुरत था
जैसे पहले आँसू प्रेम के छलके हुए
दृढ़ता से आपस में जुडने की तैयारी।
वर्षो लगे थे हमें करीब आने में
और जिस दिन पूरे करीब आ गए थे
लिखा गया था यह अंतिम पत्र।

❑❑❑

दुखी जोकर

इस हँसाने वाले जोकर की तस्वीर तो देखो
उतार ली है किसी ने उसकी दुख भरी मुद्रा में
मालूम नहीं क्यों यह भयभीत है
अभी तक इसने अपने चेहरे का मेकअप भी नहीं बदला है
काम करते-करते गुस्से से बाहर आ गया हो शायद
या काम खत्म करते ही
कोई परेशानी याद आ गयी हो
अभी वह बिल्कुल अकेला है बैठा है एक बेंच पर
अपने ढीले-ढाले कपड़ों में
सिर से हैट भी अलग नहीं कर पाया है
ना ही दे सका है हाथों से सहारा टुड्डियों को
इसी बीच किसी ने उसकी तस्वीर उतार ली
मेकअप में उसका असली चेहरा छुपा हुआ
महसूस होता है जैसे सारे जोकर उदास हों दुनिया के
ठीक उसके पीछे तम्बू दिखता है
और लगता है उसकी सारी उदासी
गिरी हुई सर्कस पर।

❑❑❑

आग

चीजों के राख में बदल जाने के बाद
कुछ भी मालूम नहीं होता
इसका पिछला स्वरूप क्या था
और आग जलती है बिना भेद-भाव के
प्राप्त करती है अपनी खुराक नरम चीजों से
और पकडने को बढ़ती है सख्ती की ओर
लेकिन कितनी आसानी से बाँध लेते हैं इसे
छोटे से मिट्टी के दीये भी, अपने आकार में
जबकि सूरज की आग की हमें परवाह नहीं
ना ही डर है चाँद-सितारों से
क्योंकि ये दूरस्थ मित्र हैं हमारे
रोटी की तरह हमारा पोषण करते हुए
और वह आग बेहद डरावनी हो सकती है कल
जो अभी बंद है किसी माचिस की डिब्बियाँ में
और जिसे शैतानी हाथ ढूँढ़ रहे हैं घुप्प अँधेरे में।

❑❑❑

यात्रा

यात्राओं में मिलते हैं अलग-अलग तरह के लोग
सभी के साथ एक हो जाते हैं हम
उनकी भाषा जानने की कोई जरूरत नहीं
वे जानते हैं कि हमें क्या चाहिए
शायद नये लोगों को देखकर
मोर भी खोल देते हैं अपने पंख।
हमारे कार्यकलाप बिल्कुल बँधे हुए
इस पवित्र नदी में स्नान करना अच्छा लगता है
इसकी भव्यता में हमारा प्रेम डूब जाता है
लोग कह रहे थे इसमें पानी अभी कम है
फिर भी विशाल थी इसकी भाव-भंगिमा।
साधुओं की तरह मंत्र उच्चारण नहीं आता है हमें
लेकिन नाव की सवारी अच्छी लगती है
यहाँ जल के दोनों ओर भवन और धर्मशालाएँ हैं
वे ही उपासना के उत्तम स्थल
वैभव से अधिक सुख प्रार्थना में शामिल होने में
इस शाम की आरती में
सैकड़ों दीयों का विर्सजन किया गया
दीये नदी में बह रहे थे एक कतार में
हर पल थी हमारी उत्सुकता उनकी तरफ
वे हमारे हाथ के जलाये हुए दीये
जल और प्रकाश दोनों का मिलन था यह
दोनों एक साथ बढ़ते हुए
हमारी यात्राओं की तरह उनकी यात्रा भी सुखद।

❑❑❑

सम्पादक

अनगिनत लोगों के पास जाती हैं पत्रिकाएँ
लेकिन सबसे अधिक ख़ुशी होती है सम्पादक को
जैसे उनका प्रेम उडकर सब तक पहुँचा
हर अंक होता है पिछले से ऊँचा और गहरा
और गहराई ही पानी को जिंदा रखती है
भीषण गर्मी के बाद भी।
एक बात भी छू जाए मन को कहीं लिखी हुई
वह पन्ना मस्तक से लगा लिया जाता है
और जहाँ हों ऐसी बातें अनगिनत
एक फूल झड़े नहीं कि दूसरी कली तब तक खिल चुकी
वे रचनाएँ जो लिखी गयी सूक्ष्म हाथों से
छपकर बन जाती है प्रशंसनीय सबके आगे
प्रोत्साहन मिलता है उन्हें, और भी अच्छा करने को
और जब तक पत्रिकाएँ जिन्दा हैं
अभिव्यक्तियाँ भी प्रस्तुत होती रहेंगी
वरन् सब कुछ खो जाने का डर है।
सम्पादक पकड़ता है अपने जाल से रचनाओं को
चुनकर पहुँचाता है सब तक सुंदर–सुंदर मोती
और वक्त कम है सबके पास
जो भी मिले उन्हें, वह श्रेष्ठ हो
वरना समय और मेहनत दोनों बेकार.

❑❑❑

अनुभव-१

अपने मन के अनुसार ही
लोग उठायेंगे बोझ, बीती हुई बातों का
कुछ को याद रहेगा पूरा का पूरा जीवन
कुछ को कुछ दिन पहले का भी नहीं
जिनको याद रहेंगी पुरानी बातें
उनका ही अनुभव विस्तृत होगा
विस्तृत अनुभव है विस्तृत प्रकाश
सामर्थ्य सब कुछ खोज डालने की
चुप बैठे नहीं रह सकते अनुभवी आदमी
जानते हैं वे हर सीमा और शक्ति प्राणी की
एक मार्ग दर्शन मिलता है उनसे
जबकि मार्ग में वे खुद होते नहीं।

❑❑❑

अनुभव-२

हर कहानियाँ कहने वाला
हमेशा ऊँचे पत्थर पर बैठना पसंद करता है
और आज मुझे जो भी कहना पड़ता है
सब कुछ बराबरी पर रहकर
फिर भी सुनने वाला कोई नहीं
सभी अपने अनुभवों का सम्राट बनना चाहते हैं
दूसरों के अनुभव जैसे उन्हें झुका देंगे
ये पहाड़ कभी भी टस से मस नहीं होंगे
इन पर चाहे पेड़ बैठे या कुहासा या बर्फ
बाकी चीजों को ही इनके इर्द-गिर्द घूमते रहना होगा
फिर भी पहाड़ तो पहाड़ ही है, कोई नाव नहीं
और हम अपनी तुलना नाव से करें तो क्या बुरा
जीवन की स्थिरता से तितली अच्छी है
पूरी स्वतंत्रता से दोनों पंख खोले हुए
रास्ते में उडने में कोई अड़चन नहीं
मधुमक्खियों का अनुभव भी छोटा सा
इतना भर कि आज उन्होंने कितना मधु एकत्र किया है
फिर भी यह हमारे लिए कितने काम का है।

❑❑❑

यह देश मेरा है

मैं कहता हूँ यह देश मेरा है
और मैंने सारी जगहों पर पाँव भी नहीं रखे हैं अभी तक।
एक उड़ान के लिए तरसते हैं
बिना पंख के लोग
और दृश्य हैं जो आज यहाँ पर वे कल भी रहेंगे
उन्हें जिस तरह बदलना है
बदलते ही रहेंगे।
हमने जो भी महसूस किया
वे हमारे निजी क्षण थे
हमें कुछ जानना है तो उन तक चलकर जाना होगा।
जो कुछ सुंदरता के छोर में है स्थित
वो अपने आप दिख जाएगा
बस प्रयास भर करना है
आँखें अच्छी तरह से खोलनी हैं।

❑❑❑

प्रशिक्षण

वह सारे काम मन लगाकर करता था
इसलिए हर दिन पिछले दिन की अपेक्षा
अधिक काम सीख चुका होता था
उसे महसूस होता था
उसके पंख धीरे-धीरे खुल रहे हैं
अब फासला बहुत कम है सफलता को छूने में
फिर भी अभी कई महीने दूर था वह
मालिक लगातार उस पर नजर गड़ाये हुए था
वह उसकी रुचि से खुश था
उसके मन में योजना बन चुकी थी
इस लडके को नयी-नयी जिम्मेवारियाँ दी जाएँ
इस पर काम का बोझ थोड़ा-थोड़ा बढ़ाया जाएँ
इसलिए नसों को अंतिम चरण तक खींचा जा रहा था
ताकि वह जो भी बने उसमें स्थिरता हो
इस तरह से वह धीरे-धीरे पूरा बदल चुका था
अब उसे पुराने कामों से हटा दिया गया
सामने उसके नये कामों की कुर्सी थी
और दायित्व बड़े-बड़े कामों को संभालने का मेज पर
जिन्हें आस्था और विश्वास के साथ उसे पूरा करना था।

❑❑❑

ठूंठ

एक छोटी सी ठूंठ का हिस्सा
पानी के ऊपर सर दिखलाता हुआ
बगुला सही जगह पर जमा हुआ है
चारों तरफ पानी है
किसी के हाथ नहीं पहुँच सकते उस तक
लेकिन उसकी चोंच मछलियों तक
बिल्कुल सुरक्षित
फिर भी यह भाग्य की बात है कि
किसे उस ठूंठ पर बैठने का अवसर मिले
दूसरों को इंतजार करने के लिए भी जगह नहीं
खाली पाया तो बैठ गए
वरना दूसरी जगह पर चल दिए
हमें भी संयोग से यह देखने में मिला
शायद बहुत भूखा होगा वह
वरना इस ठूंठ का सहारा नहीं लेता।

❑❑❑

आशा में

एक ओर उनके पास काम नहीं है
दूसरी ओर मन में बोझ, अब आगे क्या होगा
सभी की मुसीबतें एक जैसी हैं
इसलिए कोई किसी से नहीं पूछता क्या हुआ है
जिसको जितना पैसा मिलता है
वह उसे उठा लेता है, आज की मजूरी समझकर
क्योंकि बाजार गिर गया है
और पानी शायद उससे भी नीचे चला गया है,
एक लम्बा सूरज झेलने के बाद।
सभी आशा में हैं, पानी जल्दी ही वापस लौटेगा
जल्दी ही यह झील भरेगी
जल्दी ही यात्री फिर से लौटेंगे,
इसी आशा में गति देते रहते हैं
वे अपने हाथ और पैरों को,
जरा सी बारिश हुई नहीं कि
प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगते हैं आपस के लोगों में।

❑❑❑

विदाई

एक पत्थर जो पड़ा है वर्षों से वहीं का वहीं
कभी विदा नहीं होता जलधारा के साथ
और एक दिन हार मान लेती है नदी
ना ही कभी विदा होते हैं उर्वरक धरती से
चाहे कितनी ही फसलें उगाई और काट दी जाती रहें,
तुम जो मेरे सीने से निकलती हुई धड़कन हो
जो एक दिन दो से तीन हुई थी
जहाँ भी रहोगी, कहीं की भी यात्रा करती हुई
फिर से लौट कर आओगी
नाव की तरह अपने तट पर
और हम फिर से मिलकर एक हो जाएँगे
और बातें करेंगे हमेशा की तरह
उन्हीं पुरानी कुर्सियों पर बैठ कर।

❑❑❑

एक श्रद्धांजलि

हमारे सिर स्वतः ही झुक गए थे
किसी अनजाने भार से
हमने प्रतीक्षा की आनेवाली भोर की
और रात को गुजर जाने दिया
अपने कंधों पर से, धीरे-धीरे
सुबह की धूप में नम्रता थी
और बादलों को लोग
छाते की तरह महसूस कर रहे थे।
सभी को एक साथ नंगे पांव
आगे बढ़ते देखकर
रो पड़े थे बच्चे
और उनके दुख को भुलाने के लिए
अनेक संवेदनशील चेहरे आगे आये
लेकिन तब तक उनकी प्रार्थना
रोष में बदल चुकी थी
जिसमें समय आग की तरह जल रहा था
हमें विश्वास नहीं था
हमने कुछ भी खोया है
फिर भी सुरक्षित नहीं थे हम
बच्चे असमर्थ थे, इस काल चक्र को समझने में।

❑❑❑

जहाँ नहीं गया हूँ मैं

जहाँ नहीं गया हूँ मैं
उन जगहों की तस्वीर भी मुझे प्रिय
वहाँ का जीवन मेरे प्राणों तक उतर आता है
उपलब्धियों से भरी यह दुनिया
और सबसे बड़ी उपलब्धि
कहीं भी तुरंत पहुंच जाना।
फिर उन जगहों को गले लगाने में देर क्यों?
लेकिन सारी हलचलों में से
सिर्फ एक को विराम देना होता है
यही होता है हमारा निर्णय–
किस जगह पर जाना है हमें?
वह भी इतनी कठिनाई भरी जिंदगी को छोड़कर।

❑❑❑

अपने हित की बात

बचपन में कहा गया था मुझसे
उस चाँद को देखो
मैं केवल रोशनी को देखता रहा।
रोशनी के पीछे विवशताएँ थी
और लोग एक-दूसरे पर गिरे हुए।
सड़क से सिर्फ इतना ही देखा जा सकता है
फिर भी साहस था मुझमें अंधकार में देखने का
शायद सब अच्छी तरह से सो रहे होंगे
मैं सुबह की ओस में
ताजी हवा को देखता हूँ
फूलों और पत्तों की खुशबू के पात्र में
अपने को समाये हुए
मैं जागकर सोचता हूँ
फिर से अपने हित की नई बात
जिसे मैं जानता भी नहीं हूँ अब तक
किंतु सोचता हूँ क्या हो सकती है वो?

❑❑❑

यहाँ की दुनिया

बच्चा अभी-अभी स्कूल से लौटा है
खड़ा है किनारे पर
चेहरे पर भूख की रेखाएँ
और बाँहों में माँ के लिए तड़प।
माँ आ रही है झील के उस पार से
अपनी निजी नाव खेती हुई
चप्पू हिलाता है नाव को
हर पल वह दो कदम आगे बढ़ रही
बच्चा सामने है
दोनों की आँखें जुड़ी हुई
खुशी से हिलती है झील
हवा सरकती है धीरे-धीरे
किसी ने किसी को पुकारा नहीं
वे दोनों निकल चले आये ठीक समय पर
यही है यहाँ की दुनिया।

❑❑❑

सभी के लिए सुन्दर आवाज

मेरे सुख में सिर्फ मेरा सुख नहीं था
औरों को भी साथ रखना था
सभी के लिए सुन्दर आवाज
चीख से कोसों दूर
और एक तरफ खड़ा होना था मुझे
गहरे में स्थापित वृक्ष की तरह
दूसरी ओर उनके लिए भी फल और फूल।
सभी आकर छाया में बैठते हैं
और जो सचमुच थकते हैं
कितने तृप्त लगते हैं,
मैंने कहा मुझे थोड़ा समय दो
फिर से दो, नये कुएँ में भरे
निर्मल जल सी जिन्दगी
जिसमें नजर आता हो सब कुछ
साफ और सुंदर तैरता हुआ
और मेरा प्रतिबिम्ब
उसके हृदय में समाता
और बाहर निकलता हुआ।

❑❑❑

अपनी उपलब्धियाँ

अपनी उपलब्धियों को किसी को बताना या सौंपना
कितना अच्छा लगता है
शायद उनसे मिल जाए हमें थोड़ी सी इज्ज्त या प्यार
हम इस तरह से रिश्ते बना लेते हैं लोगों से
वे जो दूर खड़े हैं हमसे बहुत सारे लोग
उनकी भी उत्सुकता जाग उठती है हमारी तरफ
वे थोड़ा सा पास आने की कोशिश करते हैं
हम भी थोड़ा आगे बढ़ें तो
दोनों के हाथ आपस में मिल जाएँ
और भी बहुत सारे लोग सुनेंगे हमारे बारे में
जानेंगे खबरें पढ़कर अखबारों से
इस तरह से एक छोटी सी चीज
बहुत बड़ी बन जाएगी एक दिन।
सचमुच प्यार का कितना बड़ा विस्तार है यह
सभी, कुछ न कुछ कर रहे हैं अपनी लगन से
किसे क्या हासिल होगा यह कोई नहीं जानता।
एक चिराग हवा से बुझ जाता है
जबकि लैम्प जलते रहते हैं महीनों
और हर दिन समेटता हूँ मैं अपना सब कुछ
एकत्रित करता जाता हूँ सारे अनुभव एक जगह
ताकि फिर उन्हें सौंपा जाए लोगों को अच्छी तरह से
रिश्ते बनाने की यही तरीका है इस दुनिया में।

❑❑❑

आज की रात

आज की रात वह घर पर नहीं रहेगा
पढ़ेगा किसी खास दोस्त के साथ
उसके आग्रह में अनुमति का इंतजार नहीं है
उसकी जिद अधिक भारी है
वह रात भर जमकर पढ़ेगा क्योंकि परसों से परीक्षा है
बाकी है आज और कल, सिर्फ दो दिन
केवल दो दिनों में अपनी धार तेज करनी है उसे
उसे झुका रहना है लैम्प के प्रकाश के पास
आराम के नाम पर चाय की चुस्कियाँ बार-बार।
उसके जाने के बाद हम सोचते रहे
हाँ वह घर पर भी रहकर पढ़ सकता था
लेकिन रोकना कितना मुश्किल था उसे
दोनों दोस्त मिलकर क्या करते होंगे, वे ही जानें
किताबें बंद तो अक्षर भी अदृश्य
दोनों गहरे दोस्त हैं यह बात मन में सुकून देती है।

❑❑❑

यहाँ के दृश्य

यहाँ दृश्य टुकड़ों–टुकड़ों में बिखरे हुए हैं
एक–एक कण सभी को समर्पित
थोड़े से बादल हटते हैं
दृश्य कुछ और हो जाता है
हवा चलती है जैसे हम सभी को
एक साथ समेट लेने को
मन में इच्छा होती है वैसी आँखें मिल जाएँ
जो सब कुछ ले जाएँ अपनी झोली में।
थोड़ी सी तस्वीरें खींची हुई मेरे पास
एक पेड़ की डालियों जितनी भर
और यहाँ तो हर क्षण
कहीं भी जा सकते हैं आप दूर
–दूर तक
वो भी पलक झपकाये बिना
और भूल जाते हैं हम
किस दुल्हन का मुखड़ा ढूंढ़ रहे हैं हम यहाँ।

❑❑❑

हाथ मिलाना

उम्मीद खत्म हो जाती है जहाँ से
दूरियाँ बननी शुरू हो जाती हैं वहीं से
अब तो इन दूरियों से भी
वापस लौटकर आना होता है
किसी को भी नहीं कह सकते
हमेशा के लिए अलविदा
वास्तविकता तो यही है
मुलाकात के समय हाथ मिलाओ
लौटने के वक्त फिर से हाथ मिलाओ
एक बार जुड़ने के लिए एक बार बिछुड़ने के लिए
एक पल में सबको अपना कह दो
दूसरे पल में पराया
इसी तरह की हो गयी है दुनिया।

❑❑❑

चरखे की तरह

चरखे की तरह घूमती हर चीज को देखता हूँ मैं
लगता है इसी तरह से घूमते रहने पर ही
कुछ ठौर मिल सकता है
वरन् स्थिर लोगों के लिए
कोई जगह नहीं, कहीं पर भी।
हवा का रुकना गंदगी है,
हल चलते हैं तो खोद डालते हैं जमीन
और सोयी हुई मिट्टी को
जगाकर ले आते हैं बाहर।
मधु लटक रहा है पेड़ों पर
लेकिन वह हमारा नहीं है
वह जिसका है, उसे उसकी जानकारी है
देखना है हमें केवल अपने पाँवों को
कि आज ये कितनी दूर तक चले हैं।

❑❑❑

विदाई का टीका

कितना अच्छा लगता है
कोई स्नेह भरा हाथ टीका लगाकर
हमें यात्रा के लिए विदा करे।
अक्सर माँ ही यह काम करती है
और मैं पूरी समग्रता से
उनके पाँव छूकर निकल पड़ता हूँ।
वह जाते-जाते मुझे देखती है
फिर टीके के आकार को
कि कितना जँच रहा है मुझ पर
हालाँकि अधिक देर तक यह नहीं रहता था।
थोड़ी देर बाद हाथ-मुँह पोंछते मिट जाता था।
अक्सर मेरे सफर लम्बे नहीं होते थे
जल्दी ही वापस लौट आता था
और सबसे पहले माँ से ही मिलता था
हाथ में कुछ न कुछ उसे सौंपते हुए।
वे इन सारी चीजों को दूसरे सदस्यों में बाँट देती थी
मैं सोचता हूँ माँ की विदाई सबसे मूल्यवान थी
इसमें मेरी सारी सुख सुविधाएँ
और लौटने का इंतजार रहता था
जबकि वह सचमुच में मुझे, कभी विदा नहीं करती थी
इस टीके में उसकी दुआएँ छिपी होती थी।

❑❑❑

सुबह की हवा

यह सुबह की हवा कितनी अपनी है
इसमें ताजगी के सिवा कुछ भी नहीं
यह जरूर निर्मल पहाड़ों से आती होगी
या घने हरे-भरे जंगलों से
इस हवा की भी कोई जरूर पहचान होगी
पास इसके पहुँचते ही
आस-पास के पेड़ों के पत्ते भी टहलने लगते हैं,
हमारे साथ-साथ
अभी रोशनी थोड़ी झुकी हुई है
जैसे चुपके से जाँच रही हो हमारी चुस्ती
और आती धूप को देखकर
तेज करते हैं हम अपने कदम
घर की ओर वापसी के लिए
आज का समय बस यहीं पूरा हुआ
इस ताजगी के सहारे लड़ते रहते हैं
अपनी थकान से देर रात तक।

❑❑❑

घटनाएँ

रात और दिन की विभिन्न घटनाएँ
हमारे इर्द-गिर्द नाचती रहती हैं
जैसे इन्हें कोई सुर और ताल दे रहा हो
और हर काँपते हुए क्षण को
मैं पूर्ण सजगता से देखता हूँ
कहीं यह अविश्वास और आक्रोश की कंपन तो नहीं
और जमीन पर रख देने से
सारी थालियाँ चुप हो जाती हैं।
वे क्षण जो मोतियों की लड़ियों की तरह
मेरे पास से गुजरे
मैंने उन्हें चन्दन की तरह माथे से लगाया
और उनकी आराधना की।
आभारी हूँ मैं इस भूमि और आकाश का
जिसने मुझे रहने की जगह दी
और उन्हें पूरा हक था मेरी आत्मा को खोलकर देखने का
और मुझसे हर सवाल पूछने का ।
वे सारे क्षण जब मैंने किसी से प्यार किया था
कभी लौट कर नहीं आये
मैंने उन्हें पाने के लिए
अपनी भाषा में लड़ाई की
और उन पर लगातार लिखता रहा।

वो सारी चीजें लुप्त हो गयी हैं, जो
मैं तुम्हें फिर से याद करता हूँ
मैं फिर से अपनी उदास स्मृतियों में
रंग भरने की कोशिश करता हूँ
और पाता हूँ आज भी वे जिंदा हैं
उन्हें अब भी मेरी जरूरत है
और उनकी हँसी को चारों ओर पहुँचाया जा सकता है।

❑❑❑

सेल्समेन

शंकरा दूर से आया है
और फिर दूर चला जाएगा
इसलिए तेज चलता है, दूर तक जाता है
सभी पात्रों को टटोलता है,
कौन सा उसके लिए खाली है
नहीं तो चीजों को इधर-उधर कर जगह बनाता है,
फिर उनमें अपना सामान भरता है
और बस यूं ही नहीं, नाम मात्र के लिए
बल्कि दिखाता है कार्यान्वित करके
कि वे कितने उपयोगी हैं उनके लिए
उसे अपनी जानकारियाँ देने में मजा आता है
वह मानता है इससे लोग खुश होते हैं,
यह ग्राहकों को सलामी देने का उसका तरीका है।
इस तरह से संबंध बनाते हुए
वह आगे बढ़ता जाता है,
दूरियाँ खत्म नहीं होतीं कभी भी उसके लिए
ना ही थकते हैं उसके पाँव।

❑❑❑

जीवन उड़ता है

रात की तरह हूँ मैं
रात को ओढ़े हुए
और सुबह मुझे, सुबह की चादर ओढ़ा देगा,
नदियों के जल, तुम्हें पी सकता हूँ मैं
लेकिन समुद्र को नहीं
और सुनो अस्तित्व
कृपा करना मुझ पर भी इतनी
जो साँसें लौटा दी है मैंने तुझ पर
वापस मुझे न लौटाना।
– चाहता हूँ मैं
सारे पेड़ों की तरह मस्त होकर
हमेशा नया रहना,
जीवन उड़ता है मेरा, चिड़ियों की तरह
आवाज देता है मुझे
लेकिन नहीं है पंख, मेरे पास अब तक।

❑❑❑

सभी अलग-थलग

सारी शक्तियों की होती हैं आँखें
अनन्त आँखें।
और विचरण करता हुआ समुद्र
नहीं होता अकेला
जितने प्राणी उसमें सारे
उतनी उसकी नसें
सभी के सहारे वह चलता है
फिर कैसे वह रुक पायेगा
और देखेगा मुझे ठहरकर।
– ये पक्षी उड़ते हैं आसमान में
अपने दो पंख किनारों पर रखकर
किंतु आँखें होती हैं उनकी मेरी और
और मैं सबकी तरह
आँख बिना मिलाये उनसे
एक अनजानी खोज में बढ़ता हूँ,
सभी अलग-थलग।

❑❑❑

बदलाव

किनारे नहीं रोकते जल को
उसे पास से गुजर जाने देते हैं
इस तरह से बनाये रखते हैं
वे अपने आपको नया और तरोताजा।
आकाश भी दिखलाता है
हर दिन एक नये किस्म का चाँद
कभी बादलों से घिरा
तो कभी घुला हुआ।
हर पल हवा चलती है
और पत्ते हिलते हैं
बदल जाता है स्वरूप पेड़ का।
हम हमेशा थोड़ा–थोड़ा करके पढ़ते हैं
फिर भी पढ़ लेते हैं बहुत सारा
एक दिन किताबें बंद कर देते हैं सारी
महसूस करते हैं
अब हम वह नहीं हैं जो पहले थे कभी।

❑❑❑

किताब

अनगिनत सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद
एक किताब लिखी जाती है
अनगिनत सीढ़ियाँ उतरने के बाद
एक किताब समझी जाती है।

❑❑❑

वापसी

कई दिनों की थकान छोड़कर
वह वापस ताजगी में लौट आया है
जैसे पतझड़ के बाद लौट आते हैं पत्ते
या सीलन भरी बरसात के बाद जाड़े
और वह प्रफुल्लित लग रहा है कितना
जैसे सुबह का फूल खिला हो अभी–अभी।
काम–काज, सब में गति है
जैसे हवा से पंखुडियाँ हिल रही हों ।
मेंहदी का रंग जैसे चढ़ जाता है हाथों में
वैसा ही अनुभव पा लिया था उसने
कलम को पकड़ता है वो अब अच्छी तरह से
और चूक नहीं करता सामानों को गिनने में
ना ही देर लगाता है काम से वापस लौटने में
कितना बदल गया है वह
बदल गयी है उसकी सारी थकान, ताजगी में।

❑❑❑

छत

इन्हें भी चाव है स्थिरता का
और शौक कि लोग आयें बैठें–टहलें उसमें कुछ देर
उपयोग किया जाए उसका अच्छी तरह से।
नीचे भी दीवारों से घिरी खोखली नहीं है यह
क्षमता है इसमें सब कुछ समा लेने की
चाहे बिस्तर, मेज या रसोई का सामान
और कैसी भी छत हो इस दुनिया की
अपने ऊपर धूप सहती है
और नीचे देती है छाँव,
अपनी आखिरी उम्र तक
तथा जिस दिन उजड़ती है यह
उस दिन महसूस होता है
कितना बड़ा आकाश ढोती थी
यह अपने सर पर।

❑❑❑

ठहाकों के साथ

ठहाकों के साथ प्रवेश करते गए हम
इस शांत रात्रि में तेजी से।
हम सब बैठे हैं
जो मिले हैं पहली बार
लेकिन कितनी जल्दी बन गए मित्र
वैसे मित्र नहीं जो
आई आँधी को रोकने
आ जाते हैं सामने
बल्कि मित्र साथ देने के लिए इस पल
और उठकर जो यहाँ से बिछुड़ जाने वाले हैं।
सबने सुना एक-दूसरे को
टटोला किसी व्यावसायिक दिलचस्पी के लिए
फिर उठे तो कुछ हमेशा मिलते रहे,
एक-दूसरे से
और कुछ ने कभी देखा भी नहीं
किसी को अगली बार।

❑❑❑

टेम्पू चालक

दिन के उजाले में बेहद शक्ति होती है
प्रत्येक व्यावसायिक प्रतिष्ठान की देह
इसमें साफ-साफ दिखाई देती है
और वह निकल पड़ता है काम की खोज में
जहाँ से जो माल मिला उसे पहले उठाया
और सुबह की पहली यात्रा शुरू की।
इस तरह से तीन बार या चार बार
या उससे भी अधिक बार
कोशिश करता है कि माल ढोया जाए
और ग्राहकों तक पहुँचाया जाए।
शाम होती देखकर वह खीज पड़ता है
अभी वह थका भी नहीं और आ गई रात।
अब इस युग में बँधे समय का कोई महत्त्व नहीं रहा
रात के दस बजे भी फोन बज पड़ता है
और वह तैयार है बिना किसी तैयारी के
निकालता है वह अपना तीन पहिया
और चल पड़ता है उसकी बाजारू तान छोड़ते हुए
इस वक्त भूल जाता है वह कि यह सोने का वक्त है
और उसने कुछ खाया-पीया भी नहीं है।

❑❑❑

कुछ कहना मुश्किल है

जिनसे मिले नहीं कभी हम
उनसे भी नये संबंध बन जाते हैं
जहाँ विश्वास हो आँखें जुड़ जाती हैं
और जहाँ नहीं हो, आदमी दूर भागता रहता है
सारी कुर्सियाँ मित्रवत् स्थान देती है सबों को
कुछ देर बैठे, बातें की, फिर चले गए
फिर कोई दूसरा आकर बैठ गया
हालाँकि सामने वाली कुर्सी पर
सिर्फ एक आदमी का हक है
उसका व्यक्तित्व हम पर हमेशा हावी
यह रहस्य है कौन किस तरह से जीता है
मुलाकात सफलता में बदल जाए तो प्यारी बात है
अब पता नहीं कब मिलेंगे उनसे हम
अगली बार भी वे इसी तरह से पेश आयेंगे या नहीं
यह कहना बिल्कुल मुश्किल है।

❑❑❑

आती हुई रेलगाड़ी

रात के बढ़ने के साथ गिरता जाता है तापक्रम
और नींद से सुस्त पड़े लोग
ढुलक जाते हैं दीवारों के सहारे इधर-उधर।
हालाँकि यह खुली हुई नींद है,
जो कर रही होती है इंतजार
ओस से भींगी किसी रेलगाड़ी के आने का
जो आती है, रुकती है
और बढ़ाती है हाथ उनकी तरफ
जैसे यह उनके परिचितों की हो
और ढेर सारे लोग अपने सामानों के साथ
हो जाते हैं विदा, दोस्तों और रिश्तेदारों से मिलने।
लेकिन बचे हैं अभी बहुत सारे लोग
जिन्हें दूर तक जाना है
उनके बीच तनाव है,
गाड़ी अभी दो घंटे लेट है।
वे झांकते हैं बाहर
और अपना गुस्सा उतारते हैं रेल की पटरियों पर
फिर वापस पड़ जाते हैं सुस्त
जैसे इसका कोई उपाय नहीं,
अभी नींद से जागते रहना
चिल्लाने से अधिक जरूरी काम है।

❑❑❑

सभी जाने-पहचाने

मुझे तो सभी लगते हैं जाने–पहचाने
सभी के चेहरे, जैसे मिल चुके उनसे कभी
सभी पत्तों में सबकी थोड़ी–थोड़ी महक है
और सभी स्थिर हो जाते हैं मेरी आँखों में
जैसे मैं पेड़ की तरह सबको चिपकाये हुए
और ये एक साथ हँसते–खेलते हैं
हमेशा मेरे साथ।

❑❑❑

मैं सोचता हूँ

मैं सोचता हूँ सभी का समय कीमती रहा
सभी का अपना-अपना महत्व था
और सभी में अच्छी संभावनाएँ थीं।
छोटी सी रेत से भी भवनों का निर्माण हो जाता है
और सागर का सारा पानी दरअसल बूंद ही तो है।
रास्ते के इन पत्थरों को
मैंने कभी ठुकराया नहीं था
इन्हें नहीं समझ पाने के कारण
इनसे ठोकर खाई थी
और वे बड़े-बड़े आलीशान महल
अपने ढहते स्वरूप में भी
आधुनिकता को चुनौती दे रहे हैं
और उनका ऐतिहासिक स्वरूप आज भी जिंदा है।

❑❑❑

सुबह की सैर

मैं पहली अलार्म के साथ उठ जाता हूँ
चारों तरफ अँधेरा है अभी
और सुबह को देखने की ख्वाहिश बहुत अधिक
मीलों पैदल चलता हूँ मैं
सूरज की बाट जोहता हुआ
उसके पहले प्रकाश से मैं भी खिल उठता हूँ
और इसी तरह सुबह से लेकर रात तक
जल्दी उठने की यह नयी आदत
लगता है कितना अधिक जगा लिया है, हमने अपने आपको
सारी झुकी हुई हड्डियाँ तन गयी हैं
एक नयी ताजगी के जोर से
दिन भर जमीन पर चलना याद रहता है
हर वक्त जैसे इसकी छाती से जुड़ा हुआ
हाँ इससे भी अच्छी सैर हो सकती थी
किसी बाग–बगीचे की
फिर भी यह सैर मुझे प्रिय है
क्योंकि यह हमारे घर के बिल्कुल पास है।

❑❑❑

तुम्हारे लिए

तुम्हारी ख़ुशियों को देखने का एक आकर्षण है
एक ऊर्जा तुमसे उतर कर मेरी देह में आ जाती है
मैं अच्छी तरह से स्थिर हो जाता हूँ
आज का दिन मुझे अच्छा लगता है
मैं खिड़कियाँ खोलता हूँ और काम में लग जाता हूँ
मुझे तुमसे प्रेरणा मिलती रहती है
किस तरह से अपने मुश्किल काम हल करूँ
थोड़ा सा भी अंधकार दिखता है
लगता है तुम्हारा रूप उसे दूर कर रहा है,
अपनी रोशनी से, निरंतर।

❑❑❑

सुबह की नींद

चारों तरफ लोग घरों में हैं अपने बिस्तर पर
सुबह की नींद से उठने की कोशिश करते हुए
हम कुछ ही लोग सुनसान सडकों पर सैर करते हुए
कितना अच्छा संबंध है यह, जागे और सोकर उठते लोगों का
हमारी ताजगी जरूर उन तक पहुँचती होगी
वे हमें देखते तो शायद और भी खुश होते।
रास्ते के कुत्ते जमा हो रहे हैं एक साथ
अब उनमें सतर्कता कम दिखाई दे रही है
एक उम्मीद से घरों की ओर देखते हैं वे
लोग जागें तो उन्हें भी खाना–पीना मिले
धीरे–धीरे गाडियों का शोर बढ़ चला है सड़कों पर
सबसे पहले स्कूल जाने वाले बच्चे
निकलते हैं घरों से बाहर
अपनी पीठ पर भारी भरकम बैग लादे हुए
देखते–देखते बहुत सारे
जैसे शिक्षा घुलती जा रही हो सुबह से
और सोचते हैं हम पुराने जमाने की बात
उन दिनों ठीक चार बजे सुबह हो जाया करती थी
यह शुभ समय था हमारे अध्ययन करने का।

❑❑❑

नई चीजें

जो चीजें नई होंगी उन्हें ही लोग पढ़ेंगे
नई चीजों में नये वातावरण होते हैं
मन ऐसे कोनों में पहुँच जाता है
जिसे उसने छुआ नहीं था अभी तक
चारों तरफ नई-नई तस्वीरें
जिनके रंग अलग-अलग तरीकों से भरे हुए।
एक अलग तरह की चेतना जाग उठती है
जैसे सोये हुए हमारे पक्ष को
किसी ने जागृति प्रदान की हो
हम चीजों को अधिक सतर्कता पूर्वक पढ़ते हैं
पढ़ते-पढ़ते हमारा रुझान बढ़ता जाता है
पढ़ते-पढ़ते लगता है कुछ प्राप्त हुआ
उठने लगते हैं मस्तिष्क में कुछ नये विचार
जिनका उपयोग कभी न कभी हम करेंगे।
इन नयी बातों को, दूसरों को बताने में भी
कितना अधिक आनंद आता है।

❑❑❑

उलझा हुआ काम

यह एक उलझा हुआ काम था
इसलिए इसे छुना नहीं चाहते थे हम लोग
कई दिनों तक यह यूँ ही पड़ा रहा
जब भी देखते थे हम इसे
परेशानियाँ हमारी बढ़ जाती थी
आखिर में एक दिन ठान ही लिया हमने
किसी तरह से भी इसे खत्म करना है
और बैठ गए हम सारे मिलकर
ताकि कहीं दिक्कत आये तो
सुलझा लेगा कोई न कोई, हम में से एक।
सारी चीजों को हम गिनते रहे
मिलाते रहे उनके आकार को
बनाने वाली कम्पनी के चित्रों से
कई बार चित्र भी स्पष्ट नहीं थे
उन्हें फिर से समझा गया
मदद ली गई कम्पनी के बीजक की
संख्या के अनुमान पर उन्हें सुलझाया गया
पूरे दो घंटे लगे इस काम में
किसी ने भी दूसरी ओर नहीं झाँका
न ही चाय-पान को याद किया
सभी हर क्षण तनाव में थे
जैसे कोई पहेली सुलझा रहे हों,

अंत में सभी के सिर हलके हुए
हिम्मत बढ़ी, दूसरे कठिन कामों को करने की।

❑❑❑

बिछुड़ा हुआ दोस्त

उसने दो ग्लास शर्बत के मँगवाये थे कमरे में
एक उसके लिए था दूसरा उसके दोस्त के लिए
दोनों जिसे एक साथ बैठे पी रहे थे
बहुत दिनों बाद आया था उसका दोस्त
जिस तरह से नजरें चुरा रहा था वह मुझसे
लगा यह फिर से जुड़ने का मामला है
आजकल वह इस दोस्त का नाम नहीं लेता था
दूसरे ही कुछ नाम, जुबान पर लौट-लौट कर आते थे
वह बेहद घनिष्ठ था एक जमाने में, इसका
जहाँ भी जाते थे एक ही स्कूटर में सवार होकर
एक दिन सब कुछ बदल गया
अब उसकी चर्चा से भी घबराता था वह
आज उसे सीढ़ियों से ऊपर जाते देख आश्चर्य हुआ
दोनों की वार्ता के स्तर वे ही जानें
मैं उसके पीछे-पीछे भी नहीं गया
दूसरे दिन फिर वह उसे लेने आया था
कहीं बाहर की सैर करने
मैंने उसे थोड़ा सा शक भरी नजरों से देखा
लेकिन यह सब मेरे बेटे को अच्छा नहीं लगा
वह चाहता था इस बारे में उससे अधिक कुछ भी पूछा न जाए
वे दोस्त थे और दोस्त ही रहेंगे.

❑❑❑

लापरवाह

तुम्हें बार-बार याद दिलाया गया
फिर भी तुमने अपना काम पूरा नहीं किया
हर बार तुम्हें लगा समय अभी भारी है
इसके हल्का होते ही पूरा कर लूँगा
लेकिन जब समय हल्का हुआ
लगा अभी हल्के-हल्के काम ही किये जाए
इनमें अधिक आसानी होती है,
कठिन काम सारी नसों को खींचकर रख देते हैं ।
इस तरह से कठिन और जरूरी कामों की
एक लंबी श्रृंखला बनती गयी
और अब इनका बोझ इतना बढ़ गया
लगता था मेज टूट जाएगी,
एक डर हावी हो जाता था इसके पास बैठते ही।
इधर, सरल कामों के निपटारे हो ही रहे थे
उधर, कठिन काम थोड़े और बढ़ गए
धागे का खिंचाव शीर्ष पर था
पछतावा चारों ओर आँखें खोले बैठा था
समय पर काम न किये जाने के परिणाम
शुरू हो गए थे आने
और उनके दंड से भयभीत मन
अब तो कोई भी काम नहीं कर पा रहा था।

❑❑❑

प्रेम पत्र

कभी–कभी अस्त हुए सूरज में भी
छुपी हुई होती है लोगों की खुशी
वह बीस साल पुराना प्रेम पत्र
अभी भी उसकी जेब में था
कभी–कभी निकाल कर जिसे वह पढ़ता था
कागज के चीथढ़े–चीथढ़े हो गए थे
लेकिन उसका प्यार वैसा का वैसा।
जानकर आश्चर्य हुआ मुझे
यह अकेला पत्र था
जो पूरी जिन्दगी में लिखा गया था
सिर्फ एक बार।

❑❑❑

विकसित होता बच्चा

उसे चहारदीवारी अच्छी लगती है
लेकिन चीजें जो उसे पसंद हैं उन्हें पाने के लिए
बाहर की ओर भी देखता है
हमेशा एक आशा बनी हुई है,
हवा कोई अच्छी सी चीज लाकर भर देगी उसकी मुट्ठी में
और अगर कोई भी नहीं तो
समय ही उसकी सारी झिझक खोल देगा एक दिन
और अपने प्रस्ताव को वह खुद पहुँचायेगा दूसरों तक
इस तरह से वह बड़ा हो चुका होगा,
संबंध बनाने और बिगाडने के तरीके
थोड़े से जानने लगा होगा
लेकिन नहीं समझता होगा शायद संबंधों की गहराई को
जिससे भी थोड़ा सा प्रेम मिला, लगा यही दुनिया में एक है,
और धैर्य कितना कम था उसमें कि
जब रास्ते खुलने लगे थे, खुबसुरत दुनिया के
पहली ही नजर में परास्त हो गया,
और समझ न सका कि उसका यौवन कितना सीमित है
और प्यार असीम चारों ओर फैला हुआ।

❑❑❑

झील-१

झील का पानी बहता नहीं
बँधा रहता है इस कोने से उस कोने तक
और शांत हवा में
अब तक टूटने वाले पत्ते भी
महसूस करते हैं सुरक्षित अपने आपको
इसलिए शाम तक तट पर बैठा हुआ
देखता रहता हूँ इस झील को चुपचाप
जिसे घेरे हुए चारों ओर से
छायादार पेड़
और छोटे-छोटे पहाड़।
सूरज डूबोता है
इसमें अपने आप को
और निकाल लेता है स्वच्छ करके
मैं भी उसी तरह अपनी आँखों को
और लौटता हूँ जब
महसूस करता हूँ
मैं भी झील ही हूँ
निर्मल और शांत
अनेक दिनों तक।

❑❑❑

झील-२

दृश्यों के साथ जलवायु मिली हो तो
हो जाता है उसका प्रभाव कुछ अलग सा
ये झील, स्मारक, पहाड़, यात्री, बोट
और ढेर सारे पेड़
सभी सोते और जागते हैं
रोशनी और हवा के सहारे
घटते-बढ़ते हुए क्रम में
इसलिए यहाँ सब कुछ नया है
और जो मैं मौजूद हूँ यहाँ
इन सबको घेर लेता हूँ
अपनी भुजाओं में
जैसे ये सारे मेरे हों
और रहना चाहते हों कुछ देर मेरे साथ।

❑❑❑

नदियों का मिलन

दो नदियों का मिलना कितना अच्छा लगता है
जैसे दो दिलों का मिलन हो, यह
किसी एक का झुकना नहीं
बल्कि आत्मसमर्पण एक–दूसरे के लिए
और बहती हैं यहाँ दो नदियाँ एक होकर
अपनी तीव्र रफ्तार से
और लबालब होकर भर जाते हैं
उनके तट जल से।
चाहे कितना ही सुहावना मौसम क्यों न हो यहाँ का
कोई मतलब नहीं नदी को इससे
उसका काम ही है बहते जाना
बढ़ते जाना समुद्र तल की ओर
और जहाँ संगम हो तीन नदियों का
कितना सारा बल होगा उस धारा में
यह बात वहाँ के बाशिंदे ही जानें ।

❑❑❑

सब कुछ मौन है

सुन्दर दृश्यों, चूमता हूँ मैं तुम्हें
और तुम खत्म नहीं होते कभी
थक जाता हूँ मैं
खत्म हो जाते हैं मेरे चुम्बन
कुहासा खोलता है दृश्य पर दृश्य
जैसे हम उनके पास जा रहे हों, लगातार
सारी खिड़कियाँ खुल गयी हैं मन की
इनमें सब कुछ समा लेने की इच्छा जागृत
कोई तेज घुड़सवार आ रहा है मेरी तरफ
और बड़ी मुश्किल से सँभालता हूँ मैं अपने आपको
इस उबड़-खाबड़ जमीन से।
यहाँ पत्थरों में अभी भी हल्की बर्फ जमी हुई है
भेड़ों के लिए आजाद दुनिया, हरे-भरे मैदान की
गड़ेरिया अपनी पुरानी वेश-भूषा में टहलता हुआ
करता है आँखों से मुझे मौन सलाम
और सब कुछ मौन है यहाँ
फिर भी मुझसे बातें करता हुआ लगातार।

❑❑❑